NEXT IAS

AANKALAN

UPPSC MAINS 2024 (GENERAL HINDI) (PAPER I)

TEST 1

1. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जब कोई देश विदेशी प्रभुत्व के अधीन होता है, तब वह किसी विलुप्त युग के सपनों में वर्तमान से पलायन ढूँढ़ता है, और अपने बीते महान् कल की कल्पनाओं में सांत्वना पाता है। यह एक मूर्खतापूर्ण और ख़तरनाक विनोद है, जिसमें हम में से अनेक मग्न रहते हैं। हम भारतीयों का यह आचरण भी उतना ही प्रश्नास्पद है कि हम अब भी यह सोचते हैं कि हम आध्यात्मिक दृष्टि से महान् हैं, जबकि हम अन्य विषयों में विश्व में नीचे आ चुके हैं। आध्यात्मिक या अन्य कोई महानता, स्वतंत्रता और अवसर के अभाव में या भुखमरी और दुःख के रहते हुए संस्थापित नहीं की जा सकती। बहुत से पाश्चात्य लेखकों ने इस धारणा को बढ़ावा दिया है कि भारतीय परलोक-परायण हैं। मैं समझता हूँ कि **हर देश में निर्धन और अभागे लोग, कुछ हद तक परलोक-परायण बन जाते हैं**, जब तक कि वे क्रांतिकारी ही न बन जाएँ, क्योंकि यह लोक प्रत्यक्षतः उनके लिए नहीं है। पराधीन जनों की भी यही स्थिति होती है। जैसे-जैसे विकसित होकर कोई व्यक्ति परिपक्व होता है, वैसे-वैसे वह बाहरी वस्तुपरक दुनिया में न तो पूर्णतः तल्लीन रहता है न ही उससे संतुष्ट होता है। वह कुछ आंतरिक अर्थ भी ढूँढ़ना चाहता है, कुछ मनोवैज्ञानिक और भौतिक संतोष भी तलाशना चाहता है। यही स्थिति जनों और सभ्यताओं की भी होती है जैसे-जैसे वे परिपक्व और विकसित होकर वयस्क होते हैं। प्रत्येक सभ्यता और प्रत्येक जन बाह्य जीवन और आंतरिक जीवन की इन समानांतर धाराओं को प्रदर्शित करते हैं। जब ये धाराएँ आपस में मिल जाती हैं या एक-दूसरे के सन्निकट रहती हैं, तब संतुलन और स्थिरता बनी रहती है। जब ये भिन्न दिशाओं में चली जाती हैं, संघर्ष उत्पन्न हो जाता है तथा मन और आत्मा को यंत्रणा देने वाली संकटावस्था उत्पन्न हो जाती है।

(क) उपर्युक्त लिखित गद्य का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

गद्यांश का आशय:

जब कोई देश विदेशी शासन के अधीन होता है, तो उसकी जनता अतीत की गौरवशाली स्मृतियों में मानसिक संतोष खोजती है और वर्तमान की कठिनाइयों से बचने का प्रयास करती है। यह प्रवृत्ति आत्मविकास में बाधा डालती है क्योंकि कोई भी महानता स्वतंत्रता, अवसरों, तथा आर्थिक व सामाजिक समृद्धि के बिना स्थापित नहीं हो सकती। मानसिक परिपक्वता और संतुलन तभी संभव होता है जब बाह्य और आंतरिक जीवन में सामंजस्य बना रहे।

(ख) "महान् कल की कल्पनाओं में सांत्वना पाने" से क्या अभिप्रेत है ?

इसका अर्थ है कि जब वर्तमान परिस्थितियाँ प्रतिकूल होती हैं, तो लोग अतीत की महान उपलब्धियों को याद कर मन को सांत्वना देने का प्रयास करते हैं। वे स्वर्णिम युग की कल्पनाओं में खोकर अपनी वास्तविक स्थिति को नकारते हैं, जिससे सुधार और उन्नति की संभावनाएँ बाधित होती हैं।

(ग) गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

इस कथन का आशय यह है कि जब लोग अत्यधिक निर्धनता, अभाव और कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो वे अपने वर्तमान दुखों से राहत पाने के लिए परलोक या आध्यात्मिक विचारों की ओर उन्मुख हो जाते हैं। यह प्रवृत्ति सामान्य रूप से उन समाजों में देखी जाती है, जहाँ आर्थिक असमानता और सामाजिक अन्याय व्याप्त होता है।

निर्धन व्यक्ति के लिए वर्तमान जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से भरा होता है। जब उसे पर्याप्त अवसर, संसाधन, या सामाजिक समर्थन नहीं मिलता, तो वह अपने दुःख से बचने और मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए किसी उच्च शक्ति, आध्यात्मिकता या परलोक की कल्पना में सांत्वना खोजता है। यह एक प्रकार का मानसिक पलायन भी हो सकता है, जिसमें व्यक्ति अपनी पीड़ा को सहन करने के लिए धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों की शरण लेता है।

इसके अतिरिक्त, पराधीनता की स्थिति में भी जनसामान्य ऐसा ही व्यवहार करते हैं। जब किसी समाज को राजनैतिक या सामाजिक स्वतंत्रता नहीं मिलती, तो उसकी मानसिकता परलोक-परायण होने लगती है, क्योंकि वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की शक्ति खो चुका होता

है। यह स्थिति कभी-कभी बदलाव के प्रयासों को कमजोर कर सकती है, क्योंकि लोग वर्तमान कठिनाइयों का समाधान खोजने की बजाय आध्यात्मिक विश्वासों में ही संतोष प्राप्त करने लगते हैं।

हालाँकि, यह पूरी तरह नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं है। परलोक-परायणता के माध्यम से व्यक्ति आत्मिक शांति और सहनशक्ति प्राप्त करता है, जिससे वह कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम हो सकता है। लेकिन जब यह अत्यधिक हो जाए और व्यक्ति अपने अधिकारों एवं वास्तविक सुधार के प्रयासों से विमुख हो जाए, तो यह प्रगति में बाधा भी उत्पन्न कर सकता है।

इस प्रकार, यह कथन समाज की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का एक महत्त्वपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो बताता है कि गरीबी और अभाग्यपूर्ण स्थिति में रहने वाले लोग परलोक में अपने दुखों का समाधान खोजने लगते हैं।

2. (i) निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भाग्य नहीं बल्कि परिश्रम ही मनुष्य को निर्मित करता है। एक अमेरिकी लेखक का कहना है कि भाग्य सर्वदा किसी न किसी घटना के होने का इंतजार करता है; तीक्ष्ण निगाहों और दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त श्रम सर्वदा कुछ न कुछ लेकर आता है। भाग्य बिस्तर पर लेटा रहता है और चाहता है कि डाकिया उसे विरासत की खबर लाए; श्रम छह बजे आता है और व्यस्त कलम एवं बजते हथौड़े के साथ योग्यता की नींव रखता है। भाग्य रोता है, श्रम देखता है। भाग्य संयोग पर निर्भर करता है, श्रम चरित्र पर। भाग्य आत्म-भोग की ओर नीचे की ओर खिसकता है; श्रम ऊपर की ओर बढ़ता है और स्वतंत्रता की आकांक्षा करता है। इसलिए, यह विश्वास आगे बढ़ रहा है कि परिश्रम अच्छे भाग्य की जननी है; दूसरे शब्दों में, जीवन में एक व्यक्ति की सफलता उसके प्रयासों, उसके उद्योग और छोटी-छोटी विषय-वस्तु पर उसके ध्यान के अनुपात में होगी।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(क) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

गद्यांश का उचित शीर्षक: "परिश्रम: सफलता की कुंजी"

(ख) भाग्य और परिश्रम के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।

गद्यांश में बताया गया है कि भाग्य किसी घटना के होने की प्रतीक्षा करता है, जबकि परिश्रम व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाता है। भाग्य संयोग और आशा पर निर्भर रहता है, वहीं परिश्रम कर्मठता, इच्छाशक्ति और अनुशासन से सफलता प्राप्त करता है। भाग्य आत्म-भोग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है, जबकि परिश्रम स्वतंत्रता और उन्नति की आकांक्षा रखता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जीवन में सफलता भाग्य से अधिक परिश्रम पर निर्भर करती है।

(ii) निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण (लगभग-एक तिहाई शब्दों में) कीजिए।

निष्क्रिय प्रतिरोध शब्द का शाब्दिक अर्थ है सत्य-बल, आत्म-बल या प्रेम-बल। यह बल भौतिक सहायता से स्वतंत्र है: निश्चित रूप से अपने प्राथमिक रूप में भी, भौतिक बल या हिंसा से भी। वास्तव में, हिंसा इस महान आध्यात्मिक शक्ति का निषेध है जिसे केवल वे ही विकसित या उपयोग कर सकते हैं जो हिंसा से पूर्णतया दूर रहेंगे। यह एक ऐसी शक्ति है जिसका उपयोग व्यक्तियों के साथ-साथ समुदायों द्वारा भी किया जा सकता है। इसका उपयोग राजनीतिक और घरेलू मामलों में भी किया जा सकता है। इसकी सार्वभौमिक प्रयोज्यता इसकी स्थायित्व एवं अजेयता का प्रदर्शन है। इसका उपयोग पुरुष, महिला और बच्चे समान रूप से कर सकते हैं। यह कहना पूर्णतया सही नहीं है कि यह कमज़ोरों द्वारा उपयोग की जाने वाली शक्ति है जब तक कि वे हिंसा का जवाब हिंसा से नहीं दे सकते।

राजनीति में, इसका उपयोग इस अपरिवर्तनीय कहावत पर आधारित है कि लोगों की सरकार तभी तक संभव है जब तक वे जानबूझकर या अनजाने में शासन करने के लिए सहमत हों। इस शक्ति के प्रयोग के लिए दरिद्रता को अपनाना आवश्यक है, इस अर्थ में कि हमें इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि हमारे पास भोजन करने या कपड़े पहनने के लिए साधन हैं या नहीं, हम सब अचानक ऐसे मनुष्य नहीं बन सकते, लेकिन हमारे अंदर निष्क्रिय प्रतिरोध की भावना जितनी अधिक होगी, हम उतने ही अच्छे मनुष्य बनेंगे। इसलिए इसका प्रयोग निर्विवाद है और यह एक ऐसी शक्ति है जो यदि सार्वभौमिक हो जाए तो सामाजिक आदर्शों में क्रांतिकारी परिवर्त्तन लाएगी और निरंकुशता को दूर करेगी। निष्क्रिय प्रतिरोध सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वोत्तम शिक्षा है। इससे पहले कि कोई बच्चा वर्णमाला लिखना प्रारंभ करे और सांसारिक ज्ञान प्राप्त करे, उसे पता होना चाहिए कि आत्मा क्या है, सत्य क्या है, प्रेम क्या है, आत्मा में कौन सी शक्तियाँ निहित हैं। एक बच्चे को सीखना चाहिए कि जीवन के संघर्ष में वह घृणा को प्रेम से, असत्य को सत्य से, हिंसा को आत्म-पीड़ा से आसानी से जीत सकता है।

उत्तर:

निष्क्रिय प्रतिरोध का अर्थ सत्य-बल, आत्म-बल या प्रेम-बल है, जो भौतिक सहायता या हिंसा से स्वतंत्र है। यह केवल अहिंसक व्यक्तियों द्वारा विकसित और उपयोग किया जा सकता है तथा इसे व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक और घरेलू मामलों में लागू किया जा सकता है। इसकी सार्वभौमिकता इसे स्थायी और अजेय बनाती है।

राजनीतिक दृष्टिकोण से, सरकार तभी तक कार्य कर सकती है जब तक लोग स्वेच्छा से उसका समर्थन करते हैं। निष्क्रिय प्रतिरोध अपनाने के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है, जिससे सामाजिक आदर्शों में क्रांतिकारी बदलाव संभव हो सकता है और निरंकुशता समाप्त हो सकती है। यह सबसे उत्कृष्ट शिक्षा है, जिससे व्यक्ति सत्य, प्रेम और आत्मा की शक्ति को समझ सकता है। बच्चों को शुरू से ही यह सिखाया जाना चाहिए कि जीवन के संघर्षों में वे प्रेम, सत्य और आत्म-बल से जीत सकते हैं

3. (क) जिला कलेक्टर की ओर से मंडल आयुक्त को एक पत्र लिखिए। इस पत्र में राज्य सरकार द्वारा घोषित 'जल संरक्षण-सप्ताह' के दौरान जिले में किये गये विविध कार्यों का विवरण हो।

जिला कलेक्टर कार्यालय

[जिले का नाम]

दिनांक: [.....]

सेवा में,

मंडल आयुक्त महोदय

[मंडल का नाम]

विषय: राज्य सरकार द्वारा घोषित 'जल संरक्षण-सप्ताह' के दौरान जिले में किए गए कार्यों की जानकारी

महोदय,

राज्य सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार जिले में 'जल संरक्षण-सप्ताह' को प्रभावी रूप से मनाया गया। इस दौरान जन जागरूकता बढ़ाने, जल स्रोतों के पुनरुद्धार एवं जल बचत के उपायों को लागू करने हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस सप्ताह में निम्नलिखित प्रमुख कार्य संपन्न किए गए:

1. जन जागरूकता अभियान
   - विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थलों पर जल संरक्षण पर व्याख्यान और कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।
   - सोशल मीडिया, समाचार पत्रों एवं स्थानीय रेडियो के माध्यम से जल संरक्षण संबंधी संदेश प्रसारित किए गए।
   - जागरूकता रैली एवं हस्ताक्षर अभियान आयोजित किया गया।
2. जल स्रोतों का पुनरुद्धार
   - जिले के विभिन्न तालाबों, कुओं एवं झीलों की सफाई एवं गहरीकरण से संबंधित कार्य किया गया।
   - वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत जल-संरक्षण में सहायक पौधों का रोपण किया गया।
3. वर्षा जल संचयन योजना
   - शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी व निजी भवनों में वर्षा जल संचयन की व्यवस्था करने हेतु प्रेरित किया गया।
   - स्थानीय प्रशासन द्वारा जल-संचयन संरचनाओं की निगरानी और प्रोत्साहन किया गया।
4. सामुदायिक भागीदारी
   - ग्रामीण क्षेत्रों में जल प्रबंधन समितियों का गठन कर स्थानीय लोगों को जल संरक्षण की दिशा में सक्रिय किया गया।
   - उद्योगों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों को जल की बचत हेतु उपाय अपनाने का अनुरोध किया गया।

इन प्रयासों के माध्यम से जिले में जल संरक्षण को बढ़ावा देने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। कृपया इस कार्य की समीक्षा करें एवं यदि आवश्यक हो तो आगामी नीतियों हेतु सुझाव प्रदान करें।

भवदीय,

[जिला कलेक्टर का नाम]

जिला कलेक्टर, [जिले का नाम]

(ख) स्वास्थ्य विभाग, उ.प्र. के प्रमुख सचिव की ओर से प्रदेश में **हीट वेव** से बचाव के लिये उचित व्यवस्था करने हेतु परिपत्र तैयार कीजिए।

स्वास्थ्य विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रमुख सचिव कार्यालय

परिपत्र

दिनांक: 29 मई 2025

विषय: प्रदेश में हीट वेव से बचाव हेतु उचित व्यवस्थाओं के संबंध में निर्देश

प्रिय जिलाधिकारीगण एवं स्वास्थ्य अधिकारीगण,

गर्मी के मौसम में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में हीट वेव की संभावना बढ़ जाती है, जिससे जन स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित निर्देश जारी किए जाते हैं, ताकि हीट वेव के प्रभाव को कम किया जा सके और नागरिकों को राहत प्रदान की जा सके:

1. **जन जागरूकता अभियान:**
   - आमजन को गर्मी से बचाव के उपायों की जानकारी देने हेतु रेडियो, टीवी एवं सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाए।
   - स्थानीय प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा समुदायों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. **चिकित्सा सुविधाओं को सुदृढ़ करना:**
   - सभी सरकारी अस्पतालों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में हीट वेव प्रभावित रोगियों के लिए विशेष वार्ड बनाए जाएँ।
   - आवश्यक दवाओं एवं ओ.आर.एस. (ORS) पैकेट की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
   - चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मचारियों को हीट वेव से संबंधित बीमारियों के उपचार हेतु प्रशिक्षण दिया जाए।
3. **पेयजल एवं शीतलन व्यवस्था:**
   - सार्वजनिक स्थलों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन एवं बाजारों में शुद्ध पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
   - शीतलन केंद्र स्थापित किए जाएँ, जहाँ लोग अस्थायी रूप से गर्मी से राहत प्राप्त कर सकें।
4. **विशेष सतर्कता एवं निगरानी:**
   - वृद्धजन, बच्चों एवं श्रमिकों के लिए विशेष सतर्कता बरती जाए।
   - श्रम विभाग के सहयोग से श्रमिकों के कार्यस्थलों पर हीट वेव से बचाव हेतु आवश्यक उपाय किए जाएँ।
   - स्कूलों में छात्रों को गर्मी से बचाव के उपाय सिखाए जाएँ और आवश्यकता अनुसार स्कूलों का समय समायोजित किया जाए।
5. **आपातकालीन प्रतिक्रिया योजना:**
   - प्रत्येक जिले में आपातकालीन नियंत्रण कक्ष स्थापित किया जाए।
   - आमजन के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी किया जाए, जिससे वे सहायता प्राप्त कर सकें।
   - स्वास्थ्य एवं आपदा प्रबंधन विभाग के समन्वय से आवश्यक कदम उठाए जाएँ।

कृपया उपरोक्त निर्देशों का तत्काल पालन करें और इस संबंध में की गई कार्रवाई की रिपोर्ट मुख्यालय को प्रेषित करें।

भवदीय,

(प्रमुख सचिव, स्वास्थ्य विभाग, उत्तर प्रदेश)

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए।

कृपण- **दाता**, विषाद-**हर्ष**, हास-**रुदन**, सुदूर-**सन्निकट**, शालीन-**धृष्ट**, शूर-**भीरु**, विराट-**क्षुद्र**, रुक्ष-**मसृण**, प्रीति-**द्वेष**, गौण-**प्रमुख**

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों को पृथक् कीजिए।

अनन्य (**अन्**) , तद्भव (**तत्**), अत्युक्ति (**अति**), अधोवायु (**अधः**), उत्तीर्ण (**उत्**)

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को पृथक् कीजिए।

मानवतावाद (**वाद**)

वैज्ञानिक (**इक**)

पावती (**ती**)

महिमा (**इमा**)

मीमांसा (**सा**)

6. निम्नलिखित वाक्यांशों या पदबंधों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

(1) जिसे देख सुनकर हृदय विचलित होता हो। - **हृदयविदारक**

(2) नित्य दीन-दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था। - **सदावर्त**

(3) सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का पवित्र समय। - **ब्रह्ममुहूर्त्त**

(4) किसी टूटी-फूटी इमारत या बस्ती का बचा हुआ अंश। - **भग्नावशेष**

(5) जिसे मोक्ष की कामना हो। - **मुमुक्षु**

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

(1) उसकी स्वर बहुत मीठी है।

(2) खेतों में लंबे-लंबे घास उग आए।

(3) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा पकड़ा गया।

(4) यह चीज सपने में भी मिलना दुर्लभ है।

(5) लोग इस फूल की माला बनाकर पहनते हैं।

शुद्ध वाक्य :

(1) उसका स्वर बहुत मीठा है।

(2) खेतों में लंबी-लंबी घास उग आई।

(3) अश्वमेध का घोड़ा पकड़ा गया।

(4) यह चीज सपने में भी दुर्लभ है।

(5) लोग इन फूलों की माला बनाकर पहनते हैं।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए।

अशुद्ध	**शुद्ध**
पुष्टिकरण	पुष्टीकरण
वाकपटु	वाक्पटु (क्)
संग्रहीत	संगृहीत
प्रत्योपकार	प्रत्युपकार
पश्चाताप	पश्चात्ताप

© Copyright: NEXT IAS

8. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों का अर्थ लिखिए और उनका वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए।

(1) अंधा बाँटे रेवड़ी, फिर-फिर अपनों को दे।

अर्थ: अपने अधिकारों का लाभ अपनों को ही पहुँचाना।

वाक्य प्रयोग: मंत्री बनने के उपरांत उसने अपने ही लोगों को लाभ पहुँचाया फिर तो कहना होगा कि अंधा बाँटे रेवड़ी, फिर-फिर अपनों को दें।

(2) दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुँड़ाई।

अर्थ: मामूली सी चीज पर उसके रख-रखाव या मरम्मत पर ज्यादा खर्च।

वाक्य प्रयोग: घर में थोड़ी मरम्मत करवाई, लेकिन खर्च इतना हो गया जैसे दमड़ी की बुढ़िया, टका सिर मुड़ाई।

(3) साझे की हाँडी चौराहे फूटी।

अर्थ: जिम्मेदारी एक व्यक्ति की होनी चाहिए नहीं तो कार्य खराब हो जाता है।

वाक्य प्रयोग: अमन का सुमन के साथ मिलकर दुकान चलाना सम्भव नहीं है, क्योंकि साझे की हाँडी चौराहे पर फूटती है।

(4) बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले।

अर्थ: बिना ठीक से जाने-समझे किसी खतरनाक या मुश्किल काम में हाथ डालना।

वाक्य प्रयोग: - उसने बिना किसी अनुभव के जोखिम भरे व्यापार में हाथ डाला, यह तो बिच्छू का मंतर न जाने, साँप के बिल में हाथ डाले जैसा कार्य हो गया।

(5) सावन हरे न भादों सूखे।

अर्थ: सदा एक सी दशा

वाक्य प्रयोग: सुरेश की सेहत का हाल 'सावन हरे न भादो सूखे' जैसा है, फिर चाहे वह कितने भी डॉक्टर को दिखा ले, उसकी सेहत में कोई सुधार नहीं होता।

(6) समय पाई तरुवर फले केतिक सींचो नीर।

अर्थ: चाहे कोई उपाय करो, काम अपने समय पर ही होगा।

वाक्य प्रयोग: समय पाए तरुवर फले, केतिक सींचो नीर, इसलिए हमें अपनी मेहनत और धैर्य पर विश्वास रखना चाहिए।

(7) सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखाई देता है।

अर्थ: पक्षपात में दूसरे पक्ष की नहीं सूझती।

वाक्य प्रयोग: राजनीतिक बहस के दौरान, एक व्यक्ति ने अपने विरोधी के हर तर्क को खारिज कर दिया, यह कहते हुए कि वह गलत है। वह सावन के अंधे की तरह केवल अपने विचारों को सही मानता था।

(8) सूरदास की काली कमरी चढ़े न दूजो रंग।

अर्थ: आदतें पक्की होती है, बदलती नहीं

वाक्य प्रयोग: उसकी माँ ने हमेशा से उसे पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा, लेकिन वह हमेशा से ही संगीत में रुचि रखता था। अब, चाहे उसे कितना भी बताया जाए, वह संगीत छोड़ना नहीं चाहता। यह भी "सूरदास की काली कमरी चढ़े न दूजो रंग" के समान है।

(9) जहाज का काग होना।

अर्थ: एकमात्र ठिकाना/सहारा

वाक्य प्रयोग: वह चाहे कितनी भी नौकरियाँ बदलता रहे किंतु मैं तो अपनी कंपनी के जहाज का काग हूँ, कहीं नहीं जानेवाला।

(10) नमक-मिर्च लगाना।

अर्थ: बात को बड़ा-चढ़ाकर कहना

वाक्य प्रयोग: एक अधिकारी को चाहिए कि वह बात की तह तक जाए क्योंकि लोग तो नमक-मिर्च लगाकर कहते ही रहते हैं।

■■■■